

स्वदेश मन्त्र



हे भारत ! यह परानुवाद, परानुकरण, परमुखापेक्षा, इन दासों की सी दुर्बलता, इस घृणित, जघन्य निष्ठुरता से ही, तुम बड़े बड़े अधिकार प्राप्त करोगे ? क्या इसी लज्जास्पद कापुरुषता से, तुम वीरभोग्या स्वाधीनता प्राप्त करोगे ?

हे भारत ! मत भूलना की, तुम्हारी नारी जाति का आदर्श -सीता, सावित्री और दमयन्ती है। मत भूलना कि, तुम्हारे उपास्य -उमानाथ ! सर्वत्यागी शंकर हैं !

मत भूलना कि, तुम्हारा विवाह, धन, और तुम्हारा जीवन, इन्द्रिय-सुख के लिए, अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है ! मत भूलना कि, तुम जन्म से ही माता के लिए, बलिस्वरूप रखे गए हो ! मत भूलना, कि तुम्हारा समाज उस विराट महामाया कि छाया मात्र है ! मत भूलना, कि नीच, अज्ञानी, चमार और मेहतर; तुम्हारा रक्त हैं, तुम्हारे भाई हैं !

हे वीर ! साहस का अवलम्बन करो, गर्व से बोलो, कि मैं भारतवासी हूँ ! और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम गर्व से कहो, कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चांडाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं !

तुम भी कटिमात्र वस्त्रावृत हो कर, गर्व से पुकार कर कहो, कि भारतवासी मेरे भाई हैं ! भारतवासी मेरे प्राण हैं! भारत के सभी देवी-देवता मेरे ईश्वर हैं! भारत का समाज मेरी शिशुशय्या, मेरे यौवन का उपवन और मेरे वार्धक्य कि वाराणसी है।

भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है ! भारत के कल्याण में, मेरा कल्याण है। और रात-दिन कहते रहो; “हे गौरीनाथ ! हे जगदम्बे ! मुझे मनुष्यत्व दो ! माँ ! मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो! माँ, मुझे मनुष्य बना दो!

----स्वामी विवेकानन्द

स्वदेश मन्त्र



हे भारत ! यह परानुवाद, परानुकरण, परमुखापेक्षा, इन दासों की सी दुर्बलता, इस घृणित, जघन्य निष्ठुरता से ही, तुम बड़े बड़े अधिकार प्राप्त करोगे ? क्या इसी लज्जास्पद कापुरुषता से, तुम वीरभोग्या स्वाधीनता प्राप्त करोगे ?

हे भारत ! मत भूलना की, तुम्हारी नारी जाति का आदर्श -सीता, सावित्री और दमयन्ती है। मत भूलना कि, तुम्हारे उपास्य -उमानाथ ! सर्वत्यागी शंकर हैं !

मत भूलना कि, तुम्हारा विवाह, धन, और तुम्हारा जीवन, इन्द्रिय-सुख के लिए, अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है ! मत भूलना कि, तुम जन्म से ही माता के लिए, बलिस्वरूप रखे गए हो ! मत भूलना, कि तुम्हारा समाज उस विराट महामाया कि छाया मात्र है ! मत भूलना, कि नीच, अज्ञानी, चमार और मेहतर; तुम्हारा रक्त हैं, तुम्हारे भाई हैं !

हे वीर ! साहस का अवलम्बन करो, गर्व से बोलो, कि मैं भारतवासी हूँ ! और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम गर्व से कहो, कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चांडाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं !

तुम भी कटिमात्र वस्त्रावृत हो कर, गर्व से पुकार कर कहो, कि भारतवासी मेरे भाई हैं ! भारतवासी मेरे प्राण हैं! भारत के सभी देवी-देवता मेरे ईश्वर हैं! भारत का समाज मेरी शिशुशय्या, मेरे यौवन का उपवन और मेरे वार्धक्य कि वाराणसी है।

भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है ! भारत के कल्याण में, मेरा कल्याण है। और रात-दिन कहते रहो; “हे गौरीनाथ ! हे जगदम्बे ! मुझे मनुष्यत्व दो ! माँ ! मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो! माँ, मुझे मनुष्य बना दो!

----स्वामी विवेकानन्द

SWADESH MANTRA

Swami Vivekananda



O India! With this mere echoing of others, with this base imitation of others, with this dependence on others, this slavish weakness, this vile detestable cruelty—wouldst thou, with these provisions only, scale the highest pinnacle of civilisation and greatness? Wouldst thou attain, by means of thy disgraceful cowardice, that freedom deserved only by the brave and the heroic?

O India! Forget not that the ideal of thy womanhood is Sitā, Sāvitrī, Damayanti; forget not that the God thou worshippest is the great Ascetic of ascetics, the all-renouncing Shankara, the Lord of Umā; forget not that thy marriage, thy wealth, thy life are not for sense-pleasure, are not for thy individual personal happiness; forget not that thou art born as a sacrifice to the Mother's altar; forget not that thy social order is but the reflex of the Infinite Universal Motherhood; forget not that the lower classes, the ignorant, the poor, the illiterate, the cobbler, the sweeper, are thy flesh and blood, thy brothers.

Thou brave one, be bold, take courage, be proud that thou art an Indian, and proudly proclaim, "I am an Indian, every Indian is my brother." Say, "The ignorant Indian, the poor and destitute Indian, the Brahmin Indian, the Pariah Indian, is my brother."

Thou, too, clad with but a rag round thy loins proudly proclaim at the top of thy voice: "The Indian is my brother, the Indian is my life, India's gods and goddesses are my God. India's society is the cradle of my infancy, the pleasure-garden of my youth, the sacred heaven, the Varanasi of my old age."

Say, brother: "The soil of India is my highest heaven, the good of India is my good," and repeat and pray day and night, "*O Thou Lord of Gauri, O Thou Mother of the Universe, vouchsafe manliness unto me! O Thou Mother of Strength, take away my weakness, take away my unmanliness, and make me a Man!*"